Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खंड - अ

प्र० = 1

i) B) संशय रहित होने पर ही आगे बढ़ने की राह निकलेगी

ii) C) प्रकाश की किरणें जल उठती हैं।

iii) C) आगे बढ़ने हेतु प्रेरणा

iv) B) प्रेरणा देने वाले हाथ में

v) A) समन्वित शक्ति से प्रकाश की तीव्रता

vi) D) अदृश्य प्रेरणा शक्ति

vii) B) प्रलय (विनाश) की स्थिति का अंत

viii) D) असंतुष्ट मनुष्यों का

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

30=2

i) D) मुख

ii) D) निष्कपटता

iii) B) जोड़मेल

iv) C) अविश्वास और अपमान

v) D) अहित नहीं करता

vi) B) चाँद और सूरज के प्रकाश से।

vii) D) स्पष्ट शब्दों में सत्य का उल्लेख करना

viii) C) बचपन से ही सत्य बोलने का अभ्यास करना चाहिए।

ix) D) सत्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए

x) D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

<u>3 o=3</u>

i) B) पूरक और सहयोगी है।

ii) B) ज्ञान और कौशल की जरूरत के कारण ।

iii) D) खबरों को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना।

iv) B) लाइव ।

v) B) साक्षात्कार ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ0=4

i) c) चरागाह के लिए छोड़ी गई जमीन।

ii) D) बीज का पोषण करना।

iii) B) मन की झुंझलाहट।

iv) A) सृजन कार्य।

v) c) खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ जायगी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

30=5

i) B) कुटज के स्वाभिमान को।

ii) c) विरक्त संन्यासी

iii) B) खुशामद करना।

iv) c) अवधूत से।

v) D) कुटज शान से स्वाभिमानपूर्वक जी रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ0 – 6

i) D) पूर्वजों का पिंडदान

ii) D) अपमान और बदनामी का बदला लेने की इच्छा से

iii) D) बड़े गुलाम अली खाँ

iv) B) फूलों की गंध

v) B) पुरइन

vi) A) नदी पार करने के लिए हाथी पर बैठना

vii) B) अपने जल - स्रोतों का संरक्षण करना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ0=8

क) कविता लेखन में निम्नलिखित घटकों का महत्व होता है:
① भाषा→ कविता भाषा में लिखी जाती है, इसलिए भाषा का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है। एक कवि को भाषा के उपकरणों का प्रयोग करते हुए कुछ विशेष रचना होता है।
② शब्द→ भाषा शब्दों से बनती है। शब्दों से मेलजोल कविता लेखन का एक अनिवार्य तत्व है। इस संबंध में कवि "डब्ल्यू एच ऑर्डेन" ने कहा है 'प्ले विद द वर्ड्स' अर्थात शब्दों से खेलना चाहिए। इससे हम उनके भीतर छीपी परतों को खोल सकते हैं।
③ वाक्य→ शब्दों का विन्यास होता है जिसे वाक्य कहा जाता है।
④ शैली→ वाक्यों को गठित करने की विभिन्न प्रणालियाँ होती हैं; जिन्हें शैली कहा जाता है। अलग-अलग शैली का ज्ञान होना चाहिए।
⑤ बिंब और छंद (आंतरिक लय) :- • बिंब कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक है। बाह्य संवेदनाएँ मन के स्तर पर बिंब में बदल जाती हैं। ~~छंद~~
• छंद कविता का एक अनिवार्य तत्व है। छंद मुक्त व छंद वाली कविताओं में भाषा के संगीत का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। इसी से आंतरिक लय का निर्वहि संभव है।

ख) संवाद में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए:
① संवाद अपने आप में वर्णनात्मक न होकर क्रियात्मक होने चाहिए।
② संवाद सरल, सहज व ~~स्वाभि~~ स्वभाविक होने चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ग)

③ संवाद पात्रानुकूल होने चाहिए।
④ संवाद विषयानुकूल होने चाहिए।
⑤ संवाद उत्सुकता, उपसंहार, आश्चर्य आदि पैदा करने वाले होने चाहिए।
⑥ संवाद भावानुकूल होने चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ०२५

क) फीचर लेखन में कथात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इसमें क्लाइमेक्स वह अंत में ही आता है। इसके तीन भाग हैं प्रारंभ, मध्य एवं अंत तथा इसका एक थीम होता है फीचर उसी के ईर्द-गिर्द घूमना चाहिए। प्रारंभ मध्य और अंत को अलग-अलग नहीं, बल्कि समग्रता से देखना चाहिए। फीचर की भाषा आकर्षक होनी चाहिए सपाट व नीरस नहीं। फीचर एक प्रकार का ट्रीटमेंट पर जो विषय को उसकी जरूरत अनुसार दिया जाता है।

ख) संपादकीय लेखन को एक अखबार की आवाज़ माना जाता है। यह किसी घटना, मुद्दे या समस्या पर अखबार का अपना मत होता है। संपादकीय लेखन में किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं लिखा जाता क्योंकि यह पूरे समाचार पत्र की आवाज़ है अर्थात इसे पूरी संपादकीय टीम का मत कह सकते हैं इसे अखबार के सहायक संपादक लिखते हैं। इसका महत्त्व यह है कि इससे हमें उस समाचार पत्र के विचारों, भावों और दृष्टिकोण का पता चलता है तथा समाचार पत्रों को भी अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ०=10

क) 'गियँ नहिं हार रही होई डोरा' इन पंक्तियों के माध्यम से रानी नागमती अपने विरह का वर्णन करते हुए कहती हैं कि अपने स्वामी के वियोग में, रानी नागमती अत्यधिक कमज़ोर हो गई हैं तथा उनकी गर्दन डोरे के समान पतली हो गई है। इसी कारण वे हार का भार भी नहीं सह पा रही हैं तथा विरह में अत्यधिक व्यथित तथा व्याकुल हो गई हैं।

~~ख)~~ ग) 'तोड़ो' कविता में 'पत्थर और चट्टान' ये दो शब्द ~~बल~~ मन में उपस्थित नकारात्मक भावों के लिए प्रयुक्त हुए हैं, क्योंकि जिस प्रकार धरती में पत्थर और चट्टानें होती हैं तब तक वह पृथ्वी बंजर तथा अनउपजाऊ रहती है। उसी प्रकार मन में उपस्थित नकारात्मक भाव, नवीन सृजन के लिए बाधक होते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ०२1)

(ख)

अवतरण: के पतिआ लए- - - - - - - - - - - - - - एहि कातिक मास ॥

~~प्रसंग~~ संदर्भ: कवि: विद्यापति

कविता: पद

~~संदर्भ~~:

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने सावन के मास में राधा की विरह वेदना का अत्यंत चित्रात्मक वर्णन किया है। राधा श्रीकृष्ण के मथुरा (मधुपुर) जाने से अत्यंत दुखी है।

व्याख्या: ~~कवि क~~ नायिका राधा अपने वियोग का वर्णन करते हुए कहती है कि मेरे प्रियतम अर्थात श्रीकृष्ण के पास मेरा संदेशा कौन ले जाएगा? अर्थात कौन मेरी व्यथा के बारे मे श्रीकृष्ण को बताएगा? वह आगे कहती है कि इस सावन के महीने मे मुझसे मेरे प्रियतम से अलग रहने का असहनीय दुख सहा नहीं जाएगा। नायिका कहती है कि मैं इस महल में अपने स्वामी के बिना अकेली नहीं रह सकती तथा वह बहुत अधिक व्याकुल है। वह अपनी सहेली को बताती है कि ~~वो~~ मेरे इस भयंकर दुख का इस जग में किसी को विश्वास

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

नहीं होगा। राधा के अनुसार श्रीकृष्ण उनका हृदय अपने साथ ही रख ले गए तथा वे अब मथुरा में जा बसे हैं। नायिका कहती है कि श्रीकृष्ण ने गोकुल को छोड़कर और मथुरा में बसकर अपयश ले लिया है अर्थात उनकी काफी बदनामी हुई है। कवि विद्यापति कहते हैं कि हे। स्त्री अपने मन में आस रखो तथा अत्यधिक व्याकुल मत होना। तुम्हारे मन को भाने वाले श्रीकृष्ण इसी कार्तिक मास को तुम्हें अपने दर्शन अवश्य देंगे

विशेष: ① मैथिली भाषा का सुंदर प्रयोग है।

② भाषा सहज व स्वाभाविक है।

③ वियोग श्रृंगार रस की छटा है।

④ अनुप्रास अलंकार :- ① दुख दारुन
② मोर मन हरि हर
③ धनि धरु

⑤ राधा के वियोग का मार्मिक वर्णन किया गया है।

⑥ स्मृति बिंब है।

⑦ तुकांत शब्दों का प्रयोग है।

⑧ संगीतात्मकता विद्यमान है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ0=12

ख) 'बालक बच गया'- लघु कथा में बालक से उसकी उम्र और योग्यता से बढ़कर प्रश्न इसलिए पूछे जा रहे थे क्योंकि आज की नयी शिक्षा प्रणाली में ~~हि~~ बच्चों पर शिक्षा थोपी जाती है, तथा उन्हें वे सारी चीजें ~~रटाई~~ रटवाई जाती हैं जो उनकी योग्यता के स्तर से काफ़ी ज्यादा होती हैं। शिक्षा के नाम पर ~~उन्हीं~~ उन्हें उनकी उम्र से अधिक ~~प्र~~ पढ़ाया जाता है तथा उनके बचपन का ~~घ~~ गला घोंटा जाता है तथा उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे इन सभी को याद कर लें ताकि वे दुनिया की वाह! वाह सुन सकें।

~~ग) यह सत्य है कि चौधरी साहब की बातों में एक विलक्षण वक्रता अर्थात अजीब टेढ़ापन था। क्योंकि~~

क) बड़ी बहुरिया के संवाद सुनाते समय संवदिया की आँखों में आँसू इसलिए आ गए क्योंकि वह बड़ी बहुरिया के कष्टों को सुनकर अत्यधिक दुखी हो गया था। वह इस बात से बहुत परेशान था कि गाँव की लक्ष्मी जैसी बड़ी बहुरिया के साथ इतने अत्याचार हो रहे हैं। संवदिया एक सहृदय व्यक्ति था तथा वह संवेदनशील भी था और बड़ी बहुरिया को रोते देख उसकी आँखों में भी आँसू आ गए थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ०=13

ख)

क) झोपड़ी जलने के कारण सूरदास अपनी आर्थिक हानी को गुप्त रखना चाहता था क्योंकि:

① वह सोचता था कि एक अंधे भिखारी के लिए गरीबी इतनी लज्जा की बात नहीं है, जितनी धन संचय।

② वह धन संचय को पाप संचय मान रहा था।

③ वह किसी को नहीं बताना चाहता था कि उसके पास इतने पैसे हैं क्योंकि इससे उसकी बदनामी हो सकती थी।

④ वह गुप्त तरीके से ही अपनी सारी इच्छाएँ पूरी करना चाहता था ताकि लोगों को आश्चर्य हो कि इसके पास इतना पैसा कहाँ से ~~आया~~? आया?

⑤ वह सभी को यह दिखाना चाहता था कि गरीबों की मदद ईश्वर करता है।

इन्हीं सब कारणों की वजह से सूरदास अपनी आर्थिक हानी सबसे छुपाना चाहता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

30=14

ख)

अवतरण: मनौतियों - - - - - - - दिन हों।

संदर्भ: पाठ: दूसरा देवदास
लेखिका: ममता कालिया

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने हर की पौड़ी ~~का~~ पर रहने वाले गोताखोरों की ~~वर्णन करते हुए उनकी~~ जीवन शैली का वर्णन करते हुए बताया है कि गंगा ही उनके जीवन का आधार है।

व्याख्या: लेखिका बताती हैं कि सभी लोगों ने अपनी-अपनी मनौतियों को पूरा करने के लिए छोटे-छोटे दियों के दोने लिये हैं जिनमें फूल तथा रेजगारी भी है। वे सब इन्हें गंगा मैया में तैराते हैं तथा ये दोने गंगा मैया की लहरों पर इतराते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वहीं गंगा में उपस्थित गोताखोर उन दोनों में से चढ़ावे का पैसा उठाकर मुँह से दबा लेता है। एक औरत ने अपनी मनौतियों हेतु इक्कीस दोने तैराए हैं। वह जैसे ही एक दोना तैराती है गंगापुत्र उसमें से दो रुपये उठा लेता है तथा उसके बाद औरत दूसरा दोना तैराती है और गंगापुत्र

अर्थात गोताखोर उसमे से पैसे लेने की कोशिश करता है परंतु इतने में ही पहले दोने के दीपक में से उसकी लंगोट में आग लग जाती है। यह देखकर आस-पास के लोग हँसने लगते है परंतु इस सबसे गोताखोर व्याकुल या व्यथित नहीं होता तथा वह सर से आग बुझाने के लिए गंगा में बैठ जाता है। लेखिका बताती है कि गंगा मैया ही उसका जीवन है क्योंकि उनके सहारे ही उनकी जीविका चलती है। इसी कारण वह रेजगारी इकट्ठी कर पाता है तथा कुशाघाट पर बैठी अपनी ~~माँ~~ बीवी और बहन को उन्हें दे देता है। इन्हीं रेजगारी को बेचकर उसकी बीवी और बहन नोट कमाती है तथा एक रुपये के बदले में पच्चासी पैसे देती है और कभी-कभी अस्सी पैसे भी देती है। इसका निर्णय वे दिन के हिसाब से करती है अर्थात जब ज्यादा बिक्री होती है तो उनको लाभ होता है। अतः हम कह सकते है कि गंगा के कारण ही वे जीवित है।

विशेष: (1) भाषा सहज व विषयानुकूल है।
(2) गंगा मैया को गोताखोर की जीविका बताया गया है।
(3) चित्रात्मक वर्णन है।
(4) हर की पौड़ी पर शाम का अत्यंत सुंदर वर्णन है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ०-7

कर्तव्य-पथ पर दृढ़ रहो, होगी सफलता क्यों नहीं

"कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती", हरिवंश राय बच्चन की ये पंक्तियाँ सभी के दिलों में जोश तथा प्रोत्साहन भर देती हैं। मुश्किलें सभी के पथ पर आती हैं। कुछ लोग उन्हें छोड़कर पथ बदल देते हैं, जिसका नतीजा असफलता होती है। परंतु जो लोग डटकर सारी परेशानियों का हल करते हैं वे ही आखिर में सफलता प्राप्त कर पाते हैं। 'हमें अपने कर्तव्य पथ से कभी नहीं हटना चाहिए' इसके बारे में तो 'श्रीमद्भागवद गीता' में भी दिया गया है, इसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि हर मनुष्य को अपने कर्म तथा अच्छे कर्म अवश्य करने चाहिए और इससे उसे सुख की ~~प्राप्ति भी~~ प्राप्ति भी होती है। सभी को दृढ़-निश्चय होकर मेहनत करनी चाहिए और दुनिया की मोह-माया को छोड़कर अपना लक्ष्य पकड़ना चाहिए। हमें दिन-रात उसी नन्ही चींटी की तरह मेहनत करनी चाहिए जो सौ बार गिरने पर भी वापिस उठ जाती है। इसी प्रकार हमें भी बार-बार गिरकर, मार खाकर, धक्के खाकर भी अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहना चाहिए। इससे हमारे पथ के सभी काँटे साफ हो जाएँगे तथा सफलता एक न एक दिन हमारे कदम अवश्य चूम लेगी और हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। एक बार हार मिलने

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य सदा के लिये हार जाए। उसे यह सोचना चाहिए की भगवान ने मुझे हार दी है तो उसके पीछे कोई कारण है और उसे उस हार से उठकर वापिस कोशिश करनी चाहिए परंतु सदा के लिए हार कभी नहीं हारनी चाहिए। क्योंकि यह तो कायरों का काम होता है। एक निडर व्यक्ति अपने ~~कर्तव्यो~~ कर्मों का पालन अवश्य करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in